

①

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीरामविजयशयनः त्रिदालिमोदयायपांशः ॥



२
श्रीराम॥
१११॥

श्रीमहागणाधीपतये नमः॥ ज्ञानकी प्रीयसेरोजनेत्रं॥ मीशकुक्कुटपुष्पस्फुटता
तमीश॥ असुरदमनाच्यारुगात्र॥ सौमीनायकाशिराम॥१॥ भक्तमानसचको
रचंद्रा॥ त्रिविधतापशमनाजानंदमीश॥ भरभद्रदंड्यारवींदभमरा॥ भवभ्रमहा
राराजीवाक्षा॥२॥ मुमुक्षुचातकनवमेपरंग॥ सक्करंगातीतवनंगो॥ अमनाअमका
नीसगा॥ अक्षयजभंगानीरोपाधी॥ रणरंगधीरारघुनंदना॥ कोलवीपुटग्रथ
रचना॥ हनुमंतद्रोणाद्रीआपुनील॥ प्राणदानदीधतं॥३॥ यावरीकोल ॥४॥
कीभीषण॥ बाहरयुध्यासनयेराव॥ जीताअसंहवन॥ गुप्ततेणमाडील॥५॥ ॥१॥
सुटलआहुतीचपरीमळ॥ धुरेपीगठलनभमंडळ॥ अमीतनीरथसबळ॥ अर्धा
वाहीरनीआला॥६॥ पुणहुंतीहोतांपुण॥ सपुणभीघलेस्यंदन॥ तरीजघोधरची
रावण॥ उठवनीयांआणावा॥७॥ जैसेकोलतांविभीषण॥ सुक्षेपरीस्यकपीउरीलेदाहाजणा॥

२४

नवनील जांबुवंत वाकी सुन ॥ शिता शोक हारण पांचवा ॥ ८ ॥ गमै वमग वाक्ष गंधमादन ॥
 शरभकेशरी पावक लोचन ॥ दशरथात्मजा सवेंदुन ॥ दाही जण उगी ले ॥ ९ ॥ ते दाही
 पराक्रम करुन ॥ दशदीशाजी की तीन लगता क्षण ॥ तो देश सहस्र वां नर घेउन ॥ दशमु
 खावरी चाली ले ॥ १० ॥ जे सें बीहंग मउड ती गगनी ॥ तें सें लंके तें आले तवै येक्षणी ॥
 घरो घरी तेरी घोनी ॥ सवण गोधी ती ते वनी ॥ ११ ॥ जे जे जेट ती राक्षस ॥ सारी ताउण
 करी ती सावकाश ॥ कोटे बैसला लंके ॥ दाखवावा आम्हा शी वंगरी ॥ १२ ॥ शोधी के आवधे
 लंका सुवन ॥ परी गार्दन पडे रावण ॥ लंका वनाची राणी येउन ॥ दाखवी खुण गुतरूपे ॥ १३ ॥
 शरमा सींगें सचर ॥ नगर दुर्गरिवा लें बीधर ॥ सांतवै सलाद शर्वदर ॥ दुराचार वृपयीया ॥ १४ ॥
 जे सें जाई कलाची ते येवळे ॥ वीवरदार होती शीका ॥ वानरी फोडनी सकळा ॥
 मार्ग के लांते समई ॥ १५ ॥ तेथेर शक होत राक्षसदारण ॥ तेवधी लंका लगता क्षण ॥

वि

(3)

॥ राम विजय ॥

॥ २॥

ली

वि

जात प्रवेश को ॥ वां नरगण ॥ वीवर वी स्तीर्ण देखी लें ॥ १६ ॥ तो तें ये शीवा लय प्रचंड ॥
पुढें प्रज्वळ लें हो मकुंड ॥ आहुती या की त दश मुंडा ॥ अव्यय नेत्र झावुनी यां ॥ १७ ॥
रक्त मध्ये मांस पर्वत ॥ नर सीरे पड ती ज संख्यां ता ॥ स्नान कराने लें कनाथ ॥ वज्र
सनी बेसत ॥ १८ ॥ आश्चर्य करी ती वां नरगण ॥ आहुती न सोडी हा प्रेन ॥ कुकक्षय जा ला
संपूर्ण ॥ तरी जय आशा धरीं जसे ॥ १९ ॥ ते मां नरीं काद्य ठनी प्रचंडा यस्त
पत्रे के लीं दुखंड ॥ पा मा गो बुजुनी या दुंड ॥ हो म सर्व वी ध्येरी लें ध्वं सी ला ॥ २० ॥ सा
व दै धन के चीरा वण ॥ वस्त्र फुडुनी के लें न ॥ दाही मुखामा जीने उन ॥ युकी घा
ली ती वां नर ॥ २१ ॥ येक वर्म स्थं तां जी ती ॥ येक जागा वरी ल घुरां खावु री ती ॥ त
री सा व धन के लें का पती ॥ नाना प्रयत्न के ली या ॥ २२ ॥ म ग ते थुनी उडा ला वा की
सुत ॥ प्रवेश तो मगराणी व सा त ॥ मंदोदरी उच लो नी ज क समा त ॥ रावण पासो आणी ती ॥ २३ ॥

(३०)

पनमसुंदरसकुमार॥ रावणावरिलेदितिवान्तरा॥ चिरकंचुक्रिअळंकारा॥ केलेचुरवा
 नरि॥ २४॥ मंदोदरिहणेदशवदन॥ आगलागेलुशियअनुष्टाना॥ वानरिंविटंवि
 लिळंगना॥ लाजवैशिनाहिनुते॥ २५॥ नेपतिदत्ताकरनिनना॥ रावणावरिदेतिलो
 टन॥ मयजाआक्रंददासनूपा॥ बैकनामावणनेत्रउघडि॥ २६॥ तेमंदोदरिआरउता॥
 होमविध्वंशिलासमस्त॥ क्रोधेउठोअलंकवाथा॥ वानरावरिधाविन्नला॥ २७॥ बहु
 तवान्तरनेवेळे॥ शईघरनिआपटिले॥ अरुदमालतिशिदिधले॥ मुष्टियातबहुतये॥ २८॥
 सकळवान्तरमिळोन॥ सुवेळेहिआउपरनोन॥ ह्मणतिउठिलाजिरावणा॥ युध्या
 लागियेईलजाता॥ २९॥ सभामोडुनिअधुविरा॥ कोदंउचढविलेंसत्वर॥ ह्मणामय
 जेचेसौभाग्यसमग्र॥ आजिपासुनिखुटले॥ ३०॥ ईकडेमंदोदरिचेसमाधान॥
 करिआजालदशवदन॥ वस्त्रैमुषणेदेउन॥ हृदईद्रढधरियेति॥ ३१॥ ह्मणप्रालब्ध

(5)
॥ श्रीराम ॥
॥ ३२ ॥

मोगदरुणा ॥ प्रियेन सुटे मोगिल्लविणा ॥ आंतां ग्रहा रिडा वेंबापणा ॥ समाधानरपनसा
वें ॥ ३२ ॥ आजिमिसुंजेन निर्वाण ॥ शत्रुचिंशिरें छेदिन ॥ नहिं तरि प्रिये येथुन ॥ तुम
चिनामचि हे त्विमेदि ॥ ३३ ॥ घरास पाठविलि मंदोदरि ॥ वस्त्रें सुषेणें देठनि झडकरि ॥ रा
वणनि चालावोहरि ॥ ठोके ल्यामि रियकसरें ॥ ३४ ॥ राक्षसदकजितुके नरले ॥ तेजवघे
समागमे घेतलें ॥ अपाररणा तुटें येके वेळे ॥ जाला गलिंभयंकरा ॥ ३५ ॥ पदांतिदळपु ॥ विजया ॥
ठेजात ॥ त्याचे पाठि शिस्वारचैवाळत ॥ त्यामागे गजउन्मत्त ॥ गुढारासहि तयां वति ॥ ३६ ॥
॥ ३६ ॥ त्याचे पाठि शिरयजाति ॥ मुखवरलि त्रैलोक्यकायति ॥ छत्रं मित्रं पत्रं मित्रवि
ति ॥ पुढे गजति बंदिजन ॥ ३७ ॥ रावणरणा नावरासत्य ॥ मुक्तिने वरिषणुजात ॥ वडा
डिपुढें गेले बहुत ॥ उरले समस्त पेतले संगें ॥ ३८ ॥ मागे बंधुबिभिषण ॥ लंके रें ठेविना
रक्षणा ॥ अस्वारणा भुमिशिरावण ॥ वायुवेगें पातला ॥ ३९ ॥ तों शिळादृष्टयेथुन ॥ ४० ॥

५४

वेगें धाविले वानरगण ॥ रावणसेने करि प्रज्यन्य ॥ पर्वताचा पाडिला ॥ १४० ॥ दृष्टाद्यनुषिल उनिवा
 ण ॥ ये कुदांचि सोडि दशवदन ॥ सर्वहि पर्वत फोडुन ॥ सेने बहिर पाडित ॥ १४१ ॥ चंडपराक्रमिलें कृ
 था ॥ शरिवानररि विकिते समस्त ॥ तैसे पंदरे वीर धुन धि ॥ पुढें जाले क्षिपि ॥ १४२ ॥ रघुविरहणे
 दृष्टाक्षि ॥ मळिणा शत मुख तस्करा ॥ शिताबाणि निपामरा ॥ कुळक्षय केला व्यर्थ चि ॥ १४३ ॥
 संपत्ति संतीति विद्याधन ॥ राकिलें वेदां विरवें दान ॥ राशमावरि वाहिल च्यंदन ॥ तैसें ज्ञा
 न असुरा लुप्त ॥ १४४ ॥ आजि समरंगणि जाण ॥ लज्जत रवड विरवें करि न ॥ पुढिले अवतारि मुक्ति
 देई न ॥ असुरा जाण निश्चये ॥ १४५ ॥ लवत्रा पडलें मास शर ॥ आले होरि सावध सत्वर ॥ यावरि
 दृष्टाक्षय नेत्र ॥ प्रत्योतस्तेलसे ॥ १४६ ॥ लुंहाणारा मच्येंद्र ॥ परिमिराहु अर्ये मयें कर ॥ आजि
 रवत्रा सुकरि न समय ॥ समरि लुप्त मान विया ॥ १४७ ॥ मासा समरि सुटला बाण ॥ मेरु मांदार हो
 यचूण ॥ लुप्त कुमार मान वनंदन ॥ कैसा सोशि शिन के केले ॥ १४८ ॥ शिता सुंदर अत्यंत ॥ कष्ट

(5)

सुज

श्रीराम॥

॥४॥

हेतिअरण्याल॥ म्याअणिालिलेपुक्काप्रास॥ सर्वथाहिनकेचि॥ ५९॥ पश्चमेशिउगवेलतरणि॥ ज
रिमस्यकउचलिलधरणि॥ गजमस्यनिचंमेतिधेठनि॥ जरिसिंकेदेइलजंबुका॥ ५०॥ पाषाणवा
येकसन॥ जरिदुखवेलप्रभंजन॥ गरुडसर्पासियईलशरण॥ पतंगलक्ष्मिसगिठिजरि॥ ५१॥
हेहियेकवेळघड॥ परितुजज्यानकिदिदिनपडे॥ रावणबोलतांगड॥ मेघजैसागर्जन॥ ५२॥
स्वोतमन्त्रेणदशकंज॥ तुजमृत्युसमईकुटलाफांटा॥ माझ्याबाणाचाप्रतापमोटा॥ साहंअजिम्स
मरंगणि॥ ५३॥ रामेच्यापठणकासनिप्रचंड॥ शरपेडिलाकळदंड॥ दोघेविरपरमप्रचंडा॥ रण
वितंडमाजले॥ ५४॥ माडलेयेकचिधनच॥ गारुडतुरेवाजतिअपार॥ शिसेचिजननिधरध
रा॥ कं पितहोयदण्डाणा॥ ५५॥ आलातचकजैशमिति॥ तेविवोढितांचापेंसककलि॥ चप
केजैशात्यानकपति॥ मुद्रिकाहतिदोघाचा॥ ५६॥ सुजंगारुआचाप्रयोग॥ रावणकरितसवेग
दशदिशाफोडुनिपळगा॥ कपिकटकावरियेआले॥ ५७॥ जैसेनिविजजकहजाक॥ ०॥ ०॥

विजय
॥४॥

(5A)

तैसैसृपिं व्यापिते सकक ॥ अैसेंदे रेवो नित माल निक ॥ गत डास्त्र बाण टकित ॥ ५५ ॥ सेडितो
 सुपणारत्र बाया ॥ एधि बापि बाकाश फेडुन ॥ असंख्य धां वति वै नलानंदन ॥ सर्पसंपुर्ण
 प्रहिते ॥ ५६ ॥ सर्पसंकर्तनिसमस्त ॥ सर्वंगत ड जाले गुल ॥ ज्ञात वेदान्त्र देदिष्यवंत ॥ वि
 शतिनेत्र सेडिल ॥ ५७ ॥ पांशां डिउछेदिति पंडित ॥ तेवज कदास्त्र सेडिर धुनया ॥ रावणे वा
 तास्त्र नहुत ॥ तयावरि सेडिले ॥ ५८ ॥ रामे बाड्या लुनि पर्वत ॥ प्रमंजन केडिल समस्त ॥ व
 ज्रास्त्र त्रैरलंकनाथ ॥ फेडिले पर्वत तका ॥ ५९ ॥ मगन संभा व्यशर जाक ॥ रावणे त्रैरलं
 ताकाक ॥ यकाच बाणे अयोध्या पाक ॥ उडुनि टकित से ॥ ६० ॥ रावणे सेडिल यक शर ॥
 दिवकर मुखने जंन पार ॥ तेच्य पिंयोडुनि मत्वर ॥ राधा वावरि सेडिला ॥ ६१ ॥ रेधा तमेक
 केसंधान ॥ परितो बा निवार शर पुर्ण ॥ श्रीशमत्याचरण शिल गोना ॥ गेला मेडुनि पै
 लि कुडे ॥ ६२ ॥ राघु पति चरण वरा ॥ वामपदि मेडुनि गेला शर ॥ अैसेंदे रेवो निवां न्तर विर ॥

॥ श्रीराम ॥
॥ ५ ॥

(6)

उठि लेख्य खरखरविहि ॥ ६६ ॥ राषिपडविंहेतिवस्त्रे ॥ तेवाळ्ळेरंधेतलिअपारे ॥ ममितउठिलेये
कसेरं ॥ अपि वारकावाशिडे ॥ ६७ ॥ समर्थबळेकरनिखवका ॥ जालिविध्वंसितिप्रपंचद्व
लेविरामउपासकनिर्मक ॥ असुरबळेकराडिति ॥ ६८ ॥ अमिमानचेमुगुटथोर ॥ परमार्थवा
पेकलेचुरा ॥ लयाशस्त्राचेकवचनपार ॥ दौधखेडलोडिति ॥ ६९ ॥ समरतिअसिक्ताये
उन ॥ देवधनुष्येछेदिलिपुर्ण ॥ निरस्यचनेवन ॥ लोभभातेउडविले ॥ ७० ॥ स्फुरपस्या
क्षात्कारबाणि ॥ शिष्यपिताकासांरिवं ॥ बोधकरशेकतनि ॥ मोहाध्वजछेदिले ॥ ७१ ॥
अनुसधानपरिधयेउन ॥ अविद्यारथे ॥ चैतरयांगेछेदुन ॥ अमदपदिशटाकिले ॥ ७२ ॥
निवृत्तिअस्त्रेचालुन ॥ प्रवृत्तिअस्त्रेकेलिपुण ॥ विरक्तिगदायेउन ॥ कामकुंजरविहारिले ॥ ७३ ॥
क्रोधमदमधुरअहंकार ॥ ह्रियुढेहेतेपायभार ॥ शमदमअस्त्रअपार ॥ तेजेचुरकिलेले ॥ ७४ ॥
संकल्पिकन्मबधकुटिठ ॥ तेजसुरांचेचुरंगसबका ॥ हसमाधानशक्तिनसकक ॥ ७५ ॥

॥ विजया ॥
॥ ५ ॥

(६५)

विद्वान्निपाडिते ॥७५॥ आशामनसा कलनापुर्ण ॥ यामिंदमाकायविदारण ॥ मनोजयत्वेपु
 ढवोडया ॥ राघवमत्तकरितहो ॥७६॥ आतांजसोहापाकृत् ॥ वाक्कीरिंरगडिलेंअसुरद
 क ॥ रावणधालिबाणजाक ॥ मायापडकजयापरि ॥७७॥ रथारढलेंकनायक ॥ जैसानग
 मस्तकिंबकाहुक ॥ पृथ्वीकरिअयोध्यापाक ॥ ठाणामाहुनिउमाजिसे ॥७८॥ वाचस्प
 तिसम्पणईंद्र ॥ राजाधिराजरामचंद्र ॥ तिसनेश्वरगुणसमुद्र ॥ उदारधिरगुणाब्धि
 ॥७९॥ शितेचक्रनिजिमित्या ॥ आशासितरावयावदगुत् ॥ पुष्ट्यकरिरघुनाथ ॥
 धाडनारथयसमई ॥८०॥ मालुकिआज्ञां वंदुनि लेवेक ॥ लयाशिसागसहस्वनयन ॥ श
 स्त्रास्त्रिमरेनिस्यंदन ॥ अश्वरत्नेंरिज्ययेजिति ॥८१॥ तोमाशारथलेजागका ॥ सत्त
 रनेंइसुवेकानेका ॥ मालुकिआज्ञां वंदुनि लेवेक ॥ निचताजतासत्तर ॥८२॥ नृसि
 न वाजतांतात्काकि ॥ रथभाणिताराभाजवकि ॥ रत्नलेउतरेनितेवेकि ॥ वंदि मालुकिरामाते ॥८३॥

॥ श्रीराम ॥

॥ ६५ ॥

(४)

हृणेरजिवाक्षातमाकनिका ॥ सहस्राक्षं रथपाठवित्ता ॥ यावरिबारादोनयवेका ॥ मगयुष्मा
शिप्रवर्तावे ॥ ८४ ॥ मासेनवमातुकि ॥ रथपेरिनरणमंडकि ॥ जैसेबैकलांतेवेळि ॥ जगदात्मा
परमतोषला ॥ ८५ ॥ हृणेश्वन्यधन्यराचिनाथ ॥ समयपाहुनिक्केलेउचित ॥ जैसाह्मपुचितदेखा
मिळत्यंत ॥ मोजनंत्याशिदिष्टे ॥ ८६ ॥ वित्तगिताशिजिवनशितका ॥ रोगियाशिसरस्सर ॥ विजय ॥
जनिमन ॥ किमरनेयाशिताकाका ॥ रथपाठवित्ता ॥ ८७ ॥ किंदवकाशिपाठवित्तधन ॥ ८८ ॥
किरणिपाठिराखायेधावोन ॥ तैसापुरेदेखेदन ॥ समयोचितपाठवित्ता ॥ ८९ ॥ मगलेका
महत्वापाकरणा ॥ रथचंदलारधुनंदन ॥ उदयाचकावरिसहस्रकिर्ण ॥ किनारायणसुप
र्णावरि ॥ ९० ॥ जगद्वंद्यकेवळदाशरीथि ॥ तारणमंडकिमाहारथि ॥ पुढेमातुकिचपळेसा
रीथि ॥ थुरेशितरेबैसला ॥ ९१ ॥ रघुनृथरथिदेखेनि ॥ आनंदलेवानरगण ॥ हाणतिधं
न्यधंन्यराचिरमण ॥ पाठिराखापुणहोय ॥ ९२ ॥ रामशिदेविंपाठवित्तारथ ॥ विशिष्टेदेखेनिलेकनाथ ॥

७४

दुरेवंदाटक अत्यंत ॥ हां त्ववालकरकरां ॥ १२ ॥ नेत्रिंपाहतां राजहोस ॥ परमसंतापे वायस ॥ किं
 सज्जाये दुर्जनस ॥ माहाद्युपपजलजस ॥ १३ ॥ किंदेखे निस्संतांचिलिका ॥ निंदकाशिउपज
 कांटाळा ॥ किंशिवहुरिभ्रतिमोदरवतांडोळा ॥ ग्लेहजैसे संतापति ॥ १४ ॥ किंहरिकितनठैको
 ना ॥ विटभुतप्रेतांचेमन ॥ तैसाहोसिलारवण ॥ रथेदेखानितेक्राळिं ॥ १५ ॥ इद्रजिनपडलार
 णि ॥ त्याहुनिस्वेदवाटमनि ॥ किंमंडोदीगिविटीलिवांतरगणि ॥ त्याहुनिदुबबहुवाट ॥ १६ ॥
 परमक्रोधंरावण ॥ सोडिवाणापाविबाण ॥ अनुकरामाचेंसंधान ॥ करचुर्णसर्वेंचि ॥ १७ ॥
 सिंकासारिस्वेदोद्येजण ॥ घेघेशब्दकरिदिगजना ॥ असंख्यटाकुनिबाण ॥ मंडपवरि
 घातला ॥ १८ ॥ अयाभिलत्रिभुवन ॥ आकादिजिदेंसेजाणेकरना ॥ विमानेसांडुनिसुवगणा ॥
 पळोलागलेतेधवां ॥ १९ ॥ बापादाटलुअनुना ॥ नचाललिकादिमित्रांचेरथ ॥ वायुसाफिरा
 वयालेथ ॥ रिधनकेसर्वथा ॥ २० ॥ राघेनधारामेधवर्षति ॥ नक्षेत्रंरक्करवकारिचवलि ॥

॥ श्रीराम ॥
॥ ७१ ॥

(8)

विद्युत्मातबहुलहेति ॥ कांपेजगतिचक्रचक्रा ॥ ११ ॥ मसपाताकेकांदोकति ॥ शेषकुर्मदचकलेवि
ति ॥ राक्षसवांनरकांपति ॥ रणसंग्रामहेरेवोनियां ॥ १२ ॥ जटाक्रमेवर्णक्रमेकतन ॥ पंडितकरि
तिवेदाध्यायन ॥ तैसेरधुनायाचिबाणा ॥ परमवेगंसुटति ॥ १३ ॥ येककाकयेकमाहुकाका ॥ येक
दावाग्नियेकवडवानक ॥ शेषकरनिधुमंडक ॥ दैवहिगिगुंशछिति ॥ १४ ॥ दैकिरथधडधडि ॥ विजया ॥
ले ॥ समरियेकेजईमिकाले ॥ जम्बुसिंहिलसंधेते ॥ उभेरोहिलेदोचरीणि ॥ १५ ॥ सारथियां ॥ ७१ ॥
शिखारथिस्तणत ॥ रणधुमाकिजालिअहुता ॥ दैहिदिकंलाकांत ॥ वर्तकातो नवर्णवे ॥ १६ ॥
सारथिपरमचतुर ॥ माघारेसरिलेरुं ॥ रा ॥ जैसेपंडितवादकननिबपार ॥ हृषणयेकस्थिर
वति ॥ १७ ॥ तैसेरथमाघास्करना ॥ सत्तजबागजाककरितसंधन ॥ प्रजंन्यजैसावोस्तन
मद्युलिजैसिष्टिकरि ॥ १८ ॥ किंसागरानेभरतैवोहोएत ॥ सेवचिमद्युतिविशेषलोएत ॥ तै
सेबाणजाकवर्धत ॥ येकावरियेकपुढति ॥ १९ ॥ ससदिनअहोरात्र ॥ होतयुध्याचधनचक्र ॥

परिरामरावणसुणमान् ॥ विसावधेतलानाहिचकिं ॥ १०० ॥ रघुनाथेकाठिलेन्यारवाण ॥ सोडिले
 आपाशिठाउन ॥ राधेचेच्याहिवारदेहुन ॥ अकरमातटाकिले ॥ १०१ ॥ सेवेचिरावणानलगतां
 क्षण ॥ बुतनतुरंगजुफिलेपुण ॥ मगनरविरात्रेरघुनहब ॥ कायकरिताजाहाला ॥ १०२ ॥ का
 ठिलाअर्थचंद्रवाण ॥ जैसानवग्रहातचंडकिण ॥ पेशारासनावरियोजुन ॥ मनोवेगंसेडिला
 ॥ १०३ ॥ कांत्याबाणयेकसरें ॥ पाडिलिरावणविह्वलितिरें ॥ परिसेवेचिनिघालिपरिकरें ॥ पु
 र्विअभिहितेयवां ॥ १०४ ॥ सेवेचिचंद्रवदनशर ॥ रामसेडिलाअनिवार ॥ शिरेंछेदिलिस
 मय ॥ मायुतितैशिचउगवति ॥ १०५ ॥ देवबाणिवानर ॥ अवधेजातेचित्तालुर ॥ जातांकेसाम
 रेलहशकुंदर ॥ वारंवारशिरंनिघति ॥ १०६ ॥ राजाधिराजरघुनाथ ॥ क्षणयेकजालाचित्ताक्रां
 त ॥ लवतामानुकिमारथिबोलत ॥ राधवाप्रतिलेकाळि ॥ १०७ ॥ ह्मणअनंतब्रह्माडनायका ॥
 सकळचितपरिक्षका ॥ याचेहृदईअमृतकुपिका ॥ बाणैकर्तनिकेडिले ॥ १०८ ॥ असेंमानुकिबा

॥ श्रीराम ॥
॥ ५ ॥

(५)

वन ॥ त्याशिजनकजामालगेरविसा ॥ मगबाणकाढिलावरित ॥ अगस्तिदलमुख्यजो ॥ १९ ॥
जैसादेवांमाजिसहस्रनयन ॥ किंजंजामाजिविष्णुवहन ॥ किंकाद्रव्यांतसहस्रवदन ॥ ते
साबाणसमर्थतो ॥ २० ॥ किंवाण्णरामाजिहनुमंत ॥ किंशास्त्रामाजिवेदांत ॥ किंनक्षत्रामाजि
अहित्य ॥ तेसाबाणसमर्थतो ॥ २१ ॥ किंशास्त्रामाजिसुदर्शन ॥ किंलियांमाजिप्रयागपूर्ण ॥ किं
ह्येनामाजिजानंदवन ॥ तेसाबाणसमर्थतो ॥ २२ ॥ विषकुर्मवराहधरणि ॥ सत्यसमुद्रशशि
तरणि ॥ इतुक्रियांचिसलेकादुनि ॥ त्याबाणाचिठईठविलि ॥ २३ ॥ अग्निवायुशचिरमणा ॥
चंडिशकुवैरयमवरणा ॥ त्रिदशतपिचिंयामयपूर्ण ॥ त्याबाणाग्रिंवसतिहो ॥ २४ ॥ तोनुनिशं
तुनिकाढिलाबाण ॥ तोंसाकुळलेसमस्तांचिनयन ॥ सहस्रसुर्यांचाप्रकाशपूर्ण ॥ मुमंडकि
दाटला ॥ २५ ॥ त्याबाणामुरिवज्रलास्र ॥ स्छापितजालाराजिवनेत्र ॥ तेत्यापवरियोजिला
सत्वर ॥ विशकंठवंथेतकाकि ॥ २६ ॥ शितसरितालेवेकां ॥ आकणवरिबाणवाढिला ॥ २७

॥ विजय ॥
॥ ५ ॥

ते ते वै किं जै सें मास ले संकटां ॥ काय मांडला कलांत ॥ २५ ॥ जिकिरिता घट्टक मुक्ति ॥ तै शिप
 थिहाला वलि ॥ प्रचंड विरते वै किं ॥ प्रचंड पडां लागले ॥ २६ ॥ जगदं द्याचे कणिये उन ॥ सांग
 ते ते कां काय बाण ॥ कृपिका समवे लने तें प्राण ॥ रावणाचि पै आतां ॥ २७ ॥ असे रावणाचे व
 हस्ते ॥ लघुनियांत माळ निव ॥ काणसांडला ताका ॥ ब्रह्मांड लेणे उजळले ॥ २८ ॥ मिका
 नियां तासं रव्यच पळा ॥ कडकडे नियां वृत्तं पिडिआ ॥ तैसा बाण ते वै कां ॥ हर्दई संचर
 ला रावणाचे ॥ २९ ॥ कृपिका सहित वहा ॥ बाण फोडुनि गेला ताका ॥ हर्दई छिद्र प
 डेलें विशाळ ॥ गनाक्षिदारा सारिरे वै ॥ ३० ॥ सर्व विपरतत बाण ॥ रावणाचि तिन शिरें छेदु
 ने ॥ रघुपतिचे मातां येउन ॥ आपुल्या आपण निघाला ॥ ३१ ॥ उरलें शिरें सत छेदावया
 तें ॥ आपि कुशकादिलार घुनाथें ॥ प्रार्थिते ते कान्निबानाथें ॥ युध्य आतां पुरे जि
 ॥ ३२ ॥ रावणे सें डिला प्राण ॥ त्या शिन शिवतिनु मचे बाण ॥ आलां जवळि जाउनि अवधे जाण ॥

॥ श्रीराम ॥
॥ १९ ॥

(१०)

प्रेतपाहुतयाचे ॥ ३५ ॥ धनुष्यतु निरासहित ॥ सौमित्राजविकेदत ॥ आमुचे अवतार सुख
समस्त ॥ आजिपत्सु नि संपत्ते ॥ ३६ ॥ जालायक चि जयजवकार ॥ जयवाद्ये वाजविजसु
स्वरा ॥ दुंदुभिच्या नादे समया ॥ ब्रह्मांड ते कांदणाणि ॥ ३७ ॥ रघुपति वीर तेवका ॥ असु
तपुष्यवर्षावजाला ॥ गणधव विक्रम रेका ॥ सुवेका चकारि घावलि ॥ ३८ ॥ तो शले स्फ
क म्हे पेश्वर ॥ आनंदेना चतिवाब्बर ॥ विभव संतोषमानिधोर ॥ रामे दशवक्र वधिये
ता ॥ ३९ ॥ रघुनाथचे विरके सैके ॥ दशपुरवा गोवले मिकति ताकाक ॥ जैसा दृष्ट उन्मक
तांसमुक ॥ तैसा विशाळ पीडल हिसे ॥ ४० ॥ मुरावरि गि घवै सोन ॥ रावणाचे फेडि निनयन ॥
रक्तजातसेवाहे ना ॥ सैरावैराचे हो द्वेड ॥ ४१ ॥ मुरावरि पीडिलि धुळि ॥ मुरगुटलोक तिभुमंड
कि ॥ असो समस्त पाहुलिते वकि ॥ विभिषयादुरे वेंडवळका ॥ ४२ ॥ शरिरटा किले धरणि व
शि ॥ हृदय पीटिल देहि करि ॥ ह्मणे दशदिशा मुंन्यया उपरि ॥ माझ्या पीडि न्यानि धारि ॥ ४३ ॥

॥ विजय ॥
॥ १९ ॥

(१०९)

अगाधतयाचें प्रतापवळ ॥ राजेवाणिजसकळ ॥ चतुर्थाचा समुद्र केवळ ॥ खंडे केले वेदाचि ॥ ५४ ॥
 परमज्याचे तपदासण ॥ संपत्ति संतति युक्त पुर्ण ॥ सकळ देवांचे गवहू लीन ॥ बंदिसर्वथा तले ॥ ५५ ॥
 ज्याकारणे अदिपुत्र ॥ अवतार धरि रघु विरवेश ॥ अमृत कर्तव्य केले लें केरी ॥ निगुण बाणिले
 गुणशि ॥ ५६ ॥ जो परमपुरुष निर्विकार ॥ प्रेमकमल जमि उदार ॥ ज्यानि किजाणु निवपकार ॥ केला
 आस शिरावणे ॥ ५७ ॥ जो वेद वंद्य राजिवनेत्र ॥ तेव्हा त्या मानवाचा जाला मित्र ॥ हारावणे केला उप
 कार ॥ सुखे वास सहित आसीत ॥ ५८ ॥ श्रीराम परमेश्वर चित्स्वरूप ॥ त्याचिया अवतार किलें रूप ॥ अ
 पुलावाजविला प्रताप ॥ अद्रकि वरिरावणे ॥ ५९ ॥ श्रीराम ह्मणे विमिश्रणा प्रति ॥ तुके वळिवेक मु
 र्ति ॥ नाशिवंत चाशोक चिति ॥ काय निमित्त धारियला ॥ ६० ॥ हा जग उंबरूप सारा केवळ ॥ माई केजे
 सें मगजक ॥ किंवद्यावळी चें फळ ॥ मुळास सुनिती केचि ॥ ६१ ॥ पिंड ब्रह्मा उनाशिवंत ॥ आका
 र तेथें विकार सत्य ॥ ते मुकिच जे जशा श्वेत ॥ त्याचा शोक काय करणे ॥ ६२ ॥ जैस बोले लारधुनंदा ॥

॥ श्रीराम ॥
॥ १९० ॥

(11)

उगचरहितविमिषणा॥ तोसककस्त्रियांसहितधावोवा॥ मंडोहरितेयेंजालि॥ ५३॥ कवकुनिप
लिचेप्रेत॥ मंडोहरिशोककरित॥ बैसिसहस्रस्त्रियापिरित॥ अक्रोषेंवहनतेधवा॥ ५४॥ मंडोहरि
पेप्राणनाथा॥ जयलघुमिहेउनिरधुनाथा॥ तुजविणलसिसर्वबनाथा॥ रामजामातकेका
पै॥ ५५॥ लंकागजमस्तकिंबहुत॥ केरिचिडलाखुनाथा॥ केदुनियांहिममुक्त॥ रणामंडकिटा
कितें॥ ५६॥ सकळगुणानेतालेलंकनाथा॥ जानिगुडालेजकस्मात॥ किंवेदांचिसाववणसम
स्त॥ फुटलिजाजिरणांगणि॥ ५७॥ शिलेचेमसकतन॥ जवळिजापिलारधुनंदन॥ बाहेरवि
रोधजंतरिप्रजन॥ दशबंदेरंपैकें॥ ५८॥ एणसशिकटेहिसतिवीर॥ परिबल्यंतगोडअंतरि॥
नैशिचरावयेकेलिपरि॥ विरोधबाहेरहाउनि॥ ५९॥ बैसिमंडोहरिशोककरित॥ मोवलेविलेकिलि
समस्त॥ मगविमिषणाशिरधुनाथा॥ कायबोलताजाहला॥ ६०॥ जेष्टबंधुविजेराणि॥ मंडोहरि
जानरवाणि॥ पलिरुतेमाजिशिरामणि॥ जिरचेस्मरणिदोशानुरे॥ ६१॥ इंचंप्रातः कळिंकरीतांस्मरण॥

॥ विजय ॥
॥ १९० ॥

॥७॥

उद्धरतिलपातक्रिजन॥विमिषणालुंकरिधरन॥निजमंदिराप्रतिधाडिका॥६३॥अैसेबोलतारधुन
 दन॥मयजेपाशिंआलाविमिषण॥तियेशिकरिधरन॥छोचलासदनाप्रति॥६४॥मंडोदिसिंछेण
 न्यापपाणि॥मतेतुंज्ञानविचाराचिरवाणि॥मुक्तिद्रिष्टिधोलेनि॥अद्यज्ञानेपोहपां॥६५॥आकार
 तितुक्रानाशिवंत॥आत्मस्वरूपपूर्णशश्वत॥अैसेजाणनि किमर्थ॥शोकव्यर्थकरावा॥६६॥मयकं
 न्यसहितअंगन॥विमिषणोपाविआ॥निजसदना॥मगपुसनिगांरधुनेदना॥सजदेहेउच
 लिला॥६७॥अैसेबोलतंसच्चीदानंद॥मयकयाउगविस्तब्ध॥नमुनिराधवचरणारविंद॥नि
 जयामाशिचालिने॥६८॥सर्वोत्काससिंछेण॥गवन॥शिंघुसंगमिप्रेतनेउन॥प्रबळवन्हिंवे
 तउन॥आंसघातलेकक्रिबर॥६९॥तियेचिउतरक्रियासमस्त॥स्वयंब्रह्मदेवसांगत॥तेले
 विमिषणकरित॥शस्त्ररितिप्रमाणे॥७०॥असोयावरिविमिषण॥सुवेळेशिंआलापरतोन॥
 तोसकळलेकेचेप्रजाजन॥विमिषणाशिंमेटाले॥७१॥विद्युतजिह्वाप्रधान॥उरलेजे

श्रीरामा॥
॥११॥

(12)

ति

रक्षसगण॥ श्रीरामापुटंयेवन॥ लोटागणेंधालित॥ ॥७१॥ काष्टमस्महोतांसमस्त॥ विशेनिजायवैश्वं
नर॥ लंकेतजाडनिवान्नर॥ पाहातिनरचहुंकडे॥ ॥७२॥ हृणेल्लमलदलरजिवनयना॥ पुराणपु
नप॥ शितारमणा॥ ब्रह्माडनायकागुणसंपन्ना॥ लंकेशिवातांचलावे॥ ॥७३॥ विरंचिहन्तेनिर्मित
नगर॥ बापणाद्रिहिपाहावेसमग्र॥ मगयेउनिशितासुंदर॥ अयोध्येशिजार्जु॥ ॥७४॥ तैसेवे ॥ विजय॥
लेविभिषण॥ तेजगद्रुतहास्यवदन॥ हृणेल्लुजलकृदिधलिदान॥ तेथेजागमनबासुचंनके॥ ॥७५॥
॥७५॥ जैसेकैलियाकंबादान॥ मगतिचेकरुनधतिसौज्ञान॥ किंविप्रशिदिधलेदिव्यसदन
मगजापणनवजावे॥ ॥७६॥ ससत्रिदिधलेहवा॥ मगतिचेदुग्धनक्ष्यावेबापण॥ तैसेलंकेतमा
ज्ञेजागमन॥ सर्वधाहिनघडेचि॥ ॥७७॥ याउपरिभरथमैविषा॥ मिनकरिमंगळस्नान॥ नानाभोग
तांबुलभोजन॥ हलेंसुपुण्यधरिलिजसति॥ ॥७८॥ मगसौमित्रजणिमित्रपुत्रा॥ तयाशिहृणेशत
पत्रमित्रा॥ तुल्लिवांनरखेउनिसेवरा॥ लंकेश्रुतिजार्जु॥ ॥७९॥ सुमुर्तेपाहुनिपवित्रा॥ घरावेविभिषणाकीरछेन॥

बंदिचेराजेदेवसमथा॥ मानदेउनिमुक्तकरा॥ ८०॥ बहुताच्यावस्तुहासनि॥ रावणेंठेविन्यालेकाठ
 वनि॥ तेजाचिवस्तुलाकागोनि॥ समर्पुनिस्तुस्विकरा॥ ८१॥ बैशिआज्ञाहोतांसवर॥ बालिलेसु
 थिवळणिसौमित्र॥ विमिषणेंचातलानमस्कारा॥ साहंगरघोतमालें॥ ८२॥ श्रीरामदेतआशिवच
 ना॥ जैसाधुववकिउपमन्य॥ त्यांचेपंक्तिरेविमिषणा॥ चिरंजिवरोहसुरेवं॥ ८३॥ आज्ञाचेउनिते
 लवसरि॥ प्रवेकालेंकेमितरि॥ सुमुहुलपाहुनिउद्वरि॥ सर्वसामग्रिशिष्यकेलि॥ ८४॥ वेदमं
 त्रधोषंक्रान॥ सिंकासनिवैसविलाविमिषणा॥ दिव्यउत्रंक्रान॥ सोहकाबहुनकेलापें॥ ८५॥ बहु
 तवस्त्रंमुषणेंदेउन॥ गौरविलेसुग्रेवलक्ष्मणा॥ पाउपीस्सिककवान्नरगणा॥ वस्त्राभूषणिलोशवि
 ले॥ ८६॥ मगलंकेचिसमस्तरचना॥ दाविलिसुग्रिवालक्ष्मणा॥ पाहतांघणिनपुरनयना॥
 आनंदमनाजाहाला॥ ८७॥ असोआज्ञाचेउनिविमिषणापाशिं॥ परतोनिआलेसुवेकाशि॥ जा
 लेवर्तमानरघुविराशि॥ निवेदिलेंसर्वलेका॥ ८८॥ तोइंद्रब्रह्माआणिनंद॥ तेलिसक्रोटीदेवस

श्रीराम॥
११२॥

मया॥ असो सुवक्त्रचक्रिसमया॥ चोहो कडुनिमिक्कले॥ ५९॥ असंख्यातवाद्यंगजरा॥ दशदिशाद
षाणितिसमया॥ असो सुवक्त्रचक्रिसमया॥ चोहो कडुनिमिक्कले॥ ६०॥ देवभारिमुख्यतिथेजणा॥
ब्रह्माईप्रभाषी॥ शशाना॥ परिकोणकेसारधुनंदन॥ देवैतेवेक्ककिं॥ ६१॥ द्विष्टेदेखतारधुविरा॥
मनस्तमाविजयणीविरा॥ मासंहृदयतोहाशितकरा॥ नामेशितकजालोमि॥ ६२॥ यावरिसस्यलो
कनायक॥ देस्वानियांरावणालक॥ याशिवाटमासजनक॥ हिराब्धिवशिजगदाला॥ ६३॥ ॥ विजय॥
ईद्रासवाटलेतेववसरि॥ अमुचापगिरावाकविरा॥ कृषिभाविजित्तारि॥ आराध्यदेवत ॥ ६४॥
अमुच॥ ६४॥ कटिकंदर्पाचातत॥ जैसंस्तमामावितिसमस्त॥ पुण्वंलहेमक॥ हृदईवा
टलेतेवेकि॥ ६५॥ आसोसदाशिवआलदेस्वोला॥ शितानाथआनंदलामनि॥ आसनेसाडुनि
न्यापपाणि॥ सामोपुढंधाविनला॥ ६६॥ त्रिपुरिच्याच्यरणावरि॥ नमनकरिरावणारि॥ तेशि
वेंधरानिवरच्यावरि॥ हृदईद्रढआलंगिला॥ ६७॥ श्रीरामनिजजिमुतवर्णा॥ कर्पूरगौरविलोचन॥

ईदुमंजकिंदिसेमगचिन् ॥ तैसेशोभलेतेकाकि ॥ १५ ॥ किंशिराब्धि ॥ माजिनिक्वर्ण ॥ शोभे
 जेविबाहिनारायण ॥ किंज्याकुविठदकिंयमुनाजिवन ॥ छुष्यवर्णभिसकले ॥ १६ ॥ किंहिरि
 यान्यासंपुष्टांत ॥ शाक्यामशिवाशोभन ॥ अस्याशिवबापिशिलानाय ॥ शोभलेतेकुआलि
 गनि ॥ १७ ॥ शोबावयाचतोसकमकरंद ॥ प्रितिनसंधटेजैसामिदिह ॥ तैसशिक्वाणिपरमा
 नंद ॥ येकैठाईशोभते ॥ १८ ॥ तैयेकबनसतिरायज्या ॥ शिवविष्णुनावंभिन्न ॥ नमोदुब्जनाम
 निर्गुण ॥ तेथिचेकोभहुचुपै ॥ १९ ॥ नसोयावरेकमकसन ॥ हेतजालाजालिगन ॥ मासपिता
 हानारायण ॥ ह्मणोनिहृदईधरियेला ॥ २० ॥ जाउपरिदशशतनेव ॥ घालितसाष्टांगनमस्कार ॥
 नसकांचनवर्णसुंदर ॥ रघुविरजववितयाते ॥ २१ ॥ सरुस्त्रनेत्राशिआपपाणि ॥ हृदईधरिश्रित
 कानि ॥ मगसकळसुराकैवन्नदनि ॥ मेटताजालाप्रितिन ॥ २२ ॥ असंख्यतपंधरन ॥ देवतपिधो
 रलाहान ॥ समस्ताशोभेतरिताजिवन ॥ समसमानसर्वाशि ॥ २३ ॥ असोसकळादेवात्ममेव ॥

(15)

श्रीराम॥
॥१३॥

समेशिवैसलारधुनाथ॥ येकचिवाद्यंगजरहोत॥ जएनायकातावृत्ति॥ ॥५॥ विषाचेउजिसवर॥
गतिनारदबापितुवरा॥ सामगायनपरिकरा॥ बैक्करधुविरसाहेर॥ ॥६॥ रामविजयग्रंथपमना॥
युध्यकांडसंपलेयेधुन॥ उत्तरकांडरसगफुन॥ जालांयेधुनिजवधारा॥ ॥१॥ मुरुटावरिमणि
शोभत॥ तेविठतरकांडगोडबहुत॥ देवातयावरिमककत॥ ककसुडैसासतेजे॥ ॥२॥ भोज ॥ विजया॥
जाबंतिदध्यादना॥ किंश्रवणाजंतिमनन॥ विंस्याबंतिफकपुण॥ उत्तरकांडरसिकतेसं॥ ॥३॥
॥१॥ आरांभिकथासुरसतेथ॥ मेरसिजावाविधुनाथ॥ मुकजाईकहुनुमल॥ रायवज्जसा
धेठनिया॥ ॥२॥ तेवधागोडबहुत॥ श्रवणकोतरधुनाथभक्त॥ जेब्रह्मानंदहुल्लत॥ प्रेमकचिल
जयचें॥ ॥३॥ श्रीमद्भिमातरेवितारिया॥ श्रीअनानंदायुषवया॥ श्रीधरअनन्यशरणपाया॥
कावावाचामानसे॥ ॥४॥ रामविजयग्रंथसुंदर॥ समलवान्निक्कनारकाधार॥ सदापरिसेत
पीडितचतुर॥ त्रयःत्रिंशतिमोध्यायगोडहा॥ ॥१५॥ श्रीराम॥ श्री॥ वा॥ मा॥ जा॥ य॥ रा॥ म॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com